CONTENTS

INDEX

TITLE	Page(s)
PAY FOR PERFORMANCE PARAMETERS EFFECTIVENESS IN BANKING SECTOR: AS AN EMERGING CHALLENGE IN BUSINESS ENVIRONMENT **Neelam Kaushal**	**02**
A STUDY OF STUDENTS USING INTERNET FACILITY AT SECONDARY LEVEL AND ITS EFFECT ON THEIR ACADEMIC ACHIEVEMENT **Neeraj Kumar, Dr. Bhawesh Chandra Dubey, Sanjeev Kumar**	**15**
A STUDY OF RELATIONSHIP AMONG DIFFERENT FACTORS AND ACADEMIC PERFORMANCE OF GIRLS AT GRADUATE LEVEL. **Jitendra Kumar , Sudha Upadhyay**	**28**
A STUDY OF VALUES AMONG FEMALE ADOLESCENTS IN RELATION TO THEIR LOCALITY AT SENIOR SECONDARY LEVEL **Sachin Kaushik**	**46**
TEACHER EDUCATION: HOW FAR MAINTAINED THE QUALITY **Prof.(Dr.) Raj Kumar Nayak**	**54**
हापुड़ जिले (उत्तर प्रदेश) के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियो में निहित का उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन। डॉ0 सितेश सारस्वत	**58**

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research ISSN NO 2454-7522
ISSUE: 03 Vol: 1, No.3 January – March, 2016

हापुड़ जिले (उत्तर प्रदेश) के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियो में निहित मूल्यों का उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन।

डा0 सितेश सारस्वत
विभागाध्यक्ष
मगवती कॉलिज मेरठ

सारांश

मानवीय जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। उसके जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से जुड़ा है। यह मूल्य वह अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षो से समझने लगता है। तथा अपने अन्तर में ग्रहण करने लगता है। अच्छे वातावरण में बड़ा होकर जहां भी उच्च नैतिक मूल्य जीवन के लक्ष्य प्रतिपादित होते है वह उन्हे स्वयं उन्हे आत्मसात् कर लेता है। अन्यथा या तो वह किन्ही भी मूल्यों को ग्रहण नही कर पाता अथवा निम्न श्रेणी के मूल्यों को अपने जीवन का आधार बना लेता है। मूल्यों की श्रेष्ठता निर्धारित करने में और उन्हे आत्मसात् करने में शिक्षा का विशेष योगदान है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें हापुड़ जिले के एस0एस0वी0 पी0जी0 कॉलिज तथा आई0एम0आई0टी0कॉलिज के बी0ए0, बी0 कॉम0, बी0एस0सी0, बी0बी0ए0, तथा बी0सी0ए0 के द्वितीय वर्ष के 100 विद्यार्थियो को चुना गया है प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकत्री द्वारा निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है– 1 Study of value Test, Dr. R.K. Ojha and Dr. Mahesh Bhargava 2.Upadhyay-Sexena Socio- Economic Status Scale, Sunil Kumar Upadhyay and Alka Sexena,

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

प्रस्तावना

जीवन की सफलता का आधार वास्तव मे शिक्षा में निहित है। समय के साथ – साथ शिक्षा के उददेश्य भी बदलते रहते हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत में शिक्षा को सामाजीकरण का सशक्त साधन मानते हुए इसके द्वारा वैयक्तिकता व नागरिकता के गुणों को विकसित करने का प्रयत्न किया गया। आजकल हम शिक्षा को व्यवसायोन्मुख करने व प्रयत्न कर रहे हैं उत्तम सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण व हस्तान्तरण पर भी ध्यान दिया जा रहा है। शिक्षा द्वारा विकल्पों मे से उत्तम को चुनने की कुशलता विकसित होनी चाहिए। उत्तम विकल्प के चयन की प्रक्रिया वास्तव में मूल्य प्रक्रिया है। मानवीय जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। उसके जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से जुड़ा है। यह मूल्य वह अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षो से समझने लगता है। तथा अपने अन्तर में ग्रहण करने लगता है। अच्छे वातावरण में बड़ा होकर जहां भी उच्च नैतिक मूल्य जीवन के लक्ष्य प्रतिपादित होते है वह उन्हे स्वयं उन्हे आत्मसात् कर लेता है। अन्यथा या तो वह किन्ही भी मूल्यों को ग्रहण नही कर पाता अथवा निम्न श्रेणी के मूल्यों को अपने जीवन का आधार बना लेता है। मूल्यों की श्रेष्ठता निर्धारित करने में और उन्हे आत्मसात् करने में

शिक्षा का विशेष योगदान है। मूल्य पूर्णतयाः आन्तरिक जगह पर मनस से सम्बन्ध रखते है, इच्छा पर भी मूल्य आधारित है ,मूल्य का स्वयं में कोई अस्तित्व नही है जब तक उसमें इच्छा की पूर्ति न हो। यदि इच्छायें न हो तो मूल्य सम्भव नही है। परम मूल्य नैतिक मूल्य है। न्याय और सत्य साधन न होकर स्वयं साध्य है। ये नैतिक मूल्य है। नैतिक मूल्य स्वयंभू होते है इनमे नैतिक शुभ परम मूल्य माना जाता है। शिक्षा नैतिक व आध्यात्मिक विभेद को प्रकट करेगी तथा आध्यात्मिक एवं धार्मिक के मध्य अन्तर को बतायेगी।

मूल्य का अर्थ एवं प्रकृति–

हिन्दी का मूल्य शब्द अंग्रेजी भाषा के 'वैल्यू' (Value) शब्द का पर्याय है। अंग्रेजी भाषा के वैल्यू की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'वैलियर' (Valere) शब्द से हुई है। जिसका अर्था है योग्यता (Ability) उपयोगिता (Vtility) .व महत्व.(Importance)। व्युत्पत्ति के आधार पर हम कह सकते है कि व्यक्ति या वस्तुत का वह गुण जिसके कारण उसको उपयोग, महत्व या योग्यता जाना जाता है मूल्य कहलाता है । मूल्य के विषय में विभिन्न विचारको के विभिन्न मत है–

सुखवादी विचारक यह मानते है कि मूल्य वह है जो मनुष्य की इच्छा को तृप्त करते है। विकास वादी विचारक का कहना है कि मूल्य वह है जो जीवन वर्धक होते है। और पूर्णता वादी विचारक यह मानते है कि मूल्य वह है जिनसे आत्मलाभ होता है । यद्यपि सुखवादी मूल्य का अभिप्राय सुखभाना को, विकासवादी जीवन को, और पूर्णता वादी को आत्मा को मानते है। परन्तु तीनो ही विचार धाराओ में मूल्य को एक चैतन्य प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है। अतः इनका मानना है कि मूल्य का सम्बन्ध मनुष्य के मष्तिष्क की चेतना के स्तर से होता है।

मूल्य की परिभाषायें

सी.वी.गुड के अनुसार– मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक सामाजिक और सौन्दर्य बौद्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण मान जाती है। लगभग सभी विचार मूल्यो के अभीष्ट चरित्र को स्वीकार करते है।''

ऑलपोर्ट के शब्दों में –मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता ळें

पिलक ने मूल्य को परिभाषित करते हुए कहा है – हम वास्तव में जिसे सामान देते है, चाहते है या महत्वपूर्ण समझते हैं वही मूल्य है। यह मानवीय संरचना अभिप्रेरणात्मक विमा है। ये व्यवहार के लिए अभिप्रेरणा स्त्रोत है। ये वे मानक रूपी मानदण्ड है जिनसे मानव प्रत्यक्षीकृत क्रिया विकल्पों मं से चयन करते समय प्रभावित होता है।''

मूल्यो का वर्गीकरण– अमेरीकी तर्कशास्त्री लेविस ने मूल्यों को चार वर्गो में विभाजित किया है–

1– आन्तरिक मूल्य– आन्तरिक मूल्यों से लेविस का तात्पर्य उन मूल्यों से है जिन्हे व्यक्ति अपनी इच्छा से स्वीकार करता है और जो उसके अन्तर्गत (ह्रदय) के अंग होते हैं और जिनके पालन करने का आदेश व्यक्ति को अपने अन्दर से प्राप्त होता है और जिनके पालन से उसे आत्मसन्तोष मिलता है जैसे – सत्य।

2– **वाह्य मूल्य–** वाह्य मूल्य से तात्पर्य उन मूल्यो से है जिन्हे व्यक्ति बाह्य दबाव में स्वीकार करता है ओर जो उसकी बुद्वि को तो स्वीकार होते है पर वे उसके अन्तर्मन (ह्रदय) में स्थान नहीं बना पाते है और

जिनका पालन वह बाहरी वाह–वाह प्राप्त करने के लिए करता है। इस वर्ग में उन्होने सामाजिक व राजनैतिक नियमों को रखा है जैसे–धर्म निरपेक्ष।

3– अनिर्हित मूल्य– अंग्रेजी शब्द इनहेरेन्ट (Inherent)- का शब्दिक अर्थ है जो मनुष्य को जन्म से प्राप्त होते है परन्तु मूल्यों के सम्बन्ध में लेविस का इससे अर्थ मनुष्य की प्रकृति से है , उसके अपने स्वभाव से है। हम जानते है कि प्रेम व द्वेष मनुष्य के स्वभाविक गुण है ं उसने इस प्रकार के मूल्यों को अन्तनिर्हित मूल्यों की संज्ञा दी है।

4– **साधन मूल्य–** साधन मूल्यों से उनका तात्पर्य उन मूल्यों से है जो मूल मूल्यों की प्राप्ति में सहायक होते है, जैसे– अहिंसा के पालन में दीन–हीनों की सेवा। परन्तु यह वर्गीकरण भी युक्ति संगत नही हे। इस सन्दर्भ में प्रथम निवेदन यह है कि सभी मूल्य अपनी प्रकृति में आन्तरिक होते है ओर दूसरा निवेदन यह है कि वह उन्हे ग्रहण करता है अपने वाह्य परिवेश से।

वी0एन0के0 रेडडी ने अपनी पुस्तक '' मैन' एजूकेषन एण्ड वेल्यूज' में निम्न प्रकार के मूल्यों का उल्लेख किया है–

1– भौतिक मूल्य– ये मूल्य सहायक मूल्य होते है सम्पूर्ण विश्व यथार्थता का विस्तार है। यह यर्थाथता भौतिक है तथा पृथ्वी ,वायु, जल,आकाश और अग्नि इस यथार्थता के मुख्य अवयव है। प्रत्येक दर्शन में भौतिक चीजों को समस्त उदभव व विकास का आधार माना गया है।

2– आर्थिक मूल्य– मनुष्य को जीवन के लिए भोजन की आवश्यकता होती है । समस्त समाज तथा कार्य प्रणाली आर्थिक मूल्यों पर आधारित है जनसंख्या वृद्वि के साथ साथ धीरे–धीरे आर्थिक मूल्य अधिक महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं तथा मनुष्य भौतिकवादी होता जा रहा है।

3–मनोवैज्ञानिक मूल्य– ये उच्च मूल्य है जो चिन्तन, भावना तथा इच्छा में व्यक्ति की संकल्पित तथा भौतिक प्रकृति पर आधारित होते है। इन्हे पुन: बौद्विक मूल्य, नैतिक मूल्य तथा सौन्दर्यातमक मूल्य अर्थात् सत्य, शिव तथा सुन्दर में वर्गीकृत किया जा सकता है।

षेवर तथा स्ट्रांग– इन्होने मूल्यों को तीन वर्गो में वर्गीकृत किया है–

1– सौन्दर्यातमक मूल्य– ये वे मानदण्ड है, जिनसें हमें सुन्दरता निर्णय करते है। सुन्दरता, कला, संगीत, प्रकृति, ड्रेस, कक्षा में प्रदर्शन, व्यक्तिगत बनावट आदि क्षेत्रों से सम्बन्धित हो सकती है।

2– सहायक मूल्य – ये मानदण्ड चर्चा, व्याख्यान , प्रतियोगिता, समूह निर्माण गायन आदि को किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के सर्वाधिक प्रभारी तरीके की जॉच में काम में लाए जाते है।

3– नैतिक मूल्य– इनमें शान्ति, सहभागिता, वफादारी, सहयोग, धार्मिकता, ईमानादारी तथा समाज के लिए त्याग आदि वैयक्तिक आधारभूत मान्यताऐं तथा मानव जीवन की पवित्रता ,उचित प्रक्रिया, समान सुरक्षा, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता आदि परिस्थिति विषयक वरीयताऐं शामिल है।

एन0एल0गुप्त–श्री गुप्त के अनुसार हिन्दू, सिख, जैन,बौद्व आदि धर्मो में निम्न मूल्य उभयनिष्ठ है–

1– चोरी न करना, 2– सहनशीलता, 3– आत्मानुशासन, 4– सत्य, 5– अंहिसा, 6– ब्रह्मचर्य, 7–शुचिता, 8– तप, 9– ईश्वर–भक्ति, 10– क्षमा, 11–करूणा, 12–सादा जीवन, 13– स्पष्टवादिता, 14–साहस, 15–

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

मित्रता, 16– संतोष, 17– सत्संग, 18– मनन, 19–निःस्वार्थता, 20– सेवाभाव, 21– घृणा से मुक्ति ,22– परोपकार, 23– समानता, 14– कर्तव्यपरायणता, 15–वस्तुओं का संग्रह न करना, 26– पवित्र अध्ययन, 27– आध्यात्मिक बुद्विमानी, 28– इन्द्रिय नियन्त्रण, 29– धर्मपरायणता, 30– भव्यता, 31– नम्रता, 32– शान्ति, 33–पाखण्ड से स्वतन्त्रता, 34– परनिन्दा भाव की अनुपस्थिति।

अमरीकी शैक्षिक नीति आयोग– सन–1981 में अमरीकी शैक्षिक नीति आयोग ने पब्लिक स्कूलों के लिए निम्नलिखित मूल्य निर्धारित किए थे।–

1–मानव व्यक्तित्व के प्रति आदर 2– व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी 3–संस्थाओं का व्यक्ति के अधीन होना 4–सामान्य सहमति 5–सत्यनिष्ठा 6– समानता 7– भ्रातत्व 8– आनन्द की खोज 9– श्रेष्ठता के लिए आदर।

राष्ट्रीय षिक्षा नीति 1986 के अनुसार भारतीय समाज सांस्कृतिक दृष्टि से बहुलवादी है शिक्षा द्वारा ऐसे सार्वभौमिक व शाश्वत मूल्यों का विकास किया जाना चाहिए जा भारतीयों की एकता और उनके समाकलन की और अभिमुख हो। मूल्य शिक्षा से धार्मिक उन्माद हिंसा, अन्धविश्वास, भाग्यवाद व रूढिवादिता समाप्त होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 8.4 अनुच्छेद में शिक्षा को सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास के लिए एक सशक्त साधन बनाने के लिए कहा गया हैं शिक्षा प्रणाली पाढ्यचर्या के राष्ट्रीय ढॉचे पर आधारित होगी व इसका निर्माण इस प्रकार किया जाएगा कि भारत की उभयनिष्ठ धरोहर, प्रजातन्त्र, समतावादिता व धर्मनिरपेक्षता जैसे मूल्यों, विभिन्न लिंगों के लोगों में समानता, पर्यावरण की रक्षा, सामाजिक बाधाओ की समाप्ति, छोटे परिवार के मानक के स्वीकरण तथा वैज्ञानिक स्वभाव के विकास को बढावा मिल सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विज्ञान शिक्षा के माध्यम से बच्चों में वस्तुनिष्ठता, जिज्ञासा, सौन्दर्यात्मक संवेदनशीलता, व वैज्ञानिक स्वभाव को विकसित करने पर बल दिया गया है।

जे.आर.फैंकल के अनुसार – ''मूल्य आचार, सौन्दर्य, कुशलता या महत्व के वे मानदण्ड है जिनका लोग समर्थन करते है जिनके साथ जीते है और जिन्हे वे कायम रखते है।''

आर.बी. प्रेसी के शब्दो में– मूल्य किसी व्यक्ति के लिए रूचि का ऐसा विषय है जिसकी उत्पत्ति विषय तथा रूचि के बीच विशिष्ट सम्बन्धो से होती है।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

<u>अध्ययन की आवष्यकता–</u>

हमारा जीवन मूल्यों से संचालित होता है और जब मूल्य बदलेगें तो जीवन भी बदलेगा। मूल्यों के बदलाव को महत्वपूर्ण मानना आवश्यक है । यदि हजार वर्ष पहले कोई व्यक्ति पचास लोगों का सिर काटकर ले जाए तो उसको समाज उसे बहादुर और परमवीर मानता था, लेकिन आज हम दूसरों का जीवन बचाने के लिये रक्त और अपने शरीर के अंगो का दान करने वालो का गुणगान करते है। मूल्यों में समय के साथ अन्तर आ रहा है। प्राचीनकाल में देखे तो पता चलता है कि जो जीवन मूल्य सतयुग में थे वे त्रेता मे नहीं थे, जो त्रेता में थे वे द्वापर में नहीं थे, जो द्वापर में थे वे कलयुग में पूर्णतः विलुप्त हो चुके हैं। आज हमारा पारिवारिक जीवन दुखदः हो रहा है, सामाजिक जीवन अस्त व्यस्त हो रहा है, राष्ट्रीय जीवन अनुशासन हीन हो रहा हैं और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन अशान्त हो रहा हैं । व्यक्ति स्वार्थी, भोगी, चाटूकार, अवसरवादी, कृतघ्न हिंसक और कर्तव्यविमुख हो रहा है। परिवार में पति–पत्नी, भाई–बहन ,भाई–भाई

,पिता–पुत्र, माता–पुत्री समाज में मित्र–मित्र और पड़ौसी–पड़ौसी का सम्बन्ध तनावपूर्ण है। पारिवारिक सामाजिक जीवन मे पारस्परिक सहयोग, प्रेम, श्रद्वा, निष्ठा ईमानदारी समाप्त होती जा रही है। भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, कालाबाजारी, तस्करी, मिलावट, कालाधान, गरीबों और असहायो का शोषण दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा हैं। अनुशासनहीनता, बेईमानी, श्रम के प्रति अनास्था, अपने कर्तव्य के प्रति उदासीनता अनुत्तरदायित्व की भावना बलवती हो रही है। प्रदर्शन, तोड़ फोड़ , हिंसा और आतंक समाज और राष्ट्र का अंग बन गए है। इससे समाज में तनाव पैदा हो रहा है, भय पैदा हो रहा है हम विनाश की ओर अग्रसर हो रहे है आज मूल्यों में इतना भारी परिवर्तन हो रहा है कि जीनें का, रहने का अर्थ ही बदल गया है। ऐसी स्थिति में मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता और महत्व की अनुभूति महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। अब हमारे शिक्षकों, शिक्षा विशेषज्ञों, शिक्षा योजकों और शिक्षा के कर्णधारों की समझ मे यह बात पूर्ण रूप से आ गयी है कि शिक्षा में मूल्यों की स्थापना किए बिना पतन की ओर जाते हुए समाज और राष्ट्र का रोंका नहीं जा सकता। तभी तो नई शिक्षा नीति में हर ओर ध्यान दिया जाता है। सभी प्रकार के विचारशील लोग मूल्यों में तेजी से हो रहे ह्रास तथा उसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक जीवन में व्याप्त प्रदूषण से बहुत विक्षुब्ध हैं वास्तव में मूल्यों की यह संकटग्रस्त स्थिति जिस प्रकार जीवन के अन्य क्षेत्रो में व्याप्त है, इससे मानव जीवन विचलित होता जा रहा है।

समस्या कथन–

हापुड़ जिले (उत्तर प्रदेष) के स्नातक स्तर पर अध्ययन विद्यार्थियो में निहित मूल्यों का उनकी सामाजिक–आर्थिक` स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन।

क्रियात्मक परिभाषाएं–

स्नातक स्तर के विद्यार्थी– प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर से तात्पर्य`सामान्य बी0 ए0, बी0 एस0 सी, बी0 काम0, बी0 बी0 ए0, बी0 सी0 ए0 की शिक्षा से है।**मूल्य–** मूल्य महत्व के बारे में निर्णय के मापदण्ड तथा नियम हैं। ये वे मानदण्ड हैं जिनसे हम चीजों (लोगो, वस्तुओं, विचारों, कियाओ, तथा परिस्थितियों) के अच्छा महत्वपूर्ण व वांछनीय होने अथवा खराब महत्वहीन व तिरस्करणीय होने के बारे में निर्णय करते हैं । प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित छः मूल्यों को सम्मिलित किया गया है।

1–सैद्वान्तिक, 2– आर्थिक, 3– सौन्दर्यात्मक, 4– सामाजिक, 5– राजनीतिक, 6– धार्मिक।

स्पैंगलर द्वारा विभाजित छः मूल्यों की व्याख्या–

1– सैद्वान्तिक मूल्य– स्पैंगलर महोदय ने सैद्वान्तिक मूल्यो की व्याख्या करते हुए कहा है कि एक सैद्वान्तिक व्यक्ति की प्रबल इच्छा सत्य की खोज करना होता है। इसे प्राप्त करने के लिए वह अथक प्रयास करता है तथा अपने योजनाबद्व तरीके से निरीक्षण तथा उसके कारणों में सदैव लगा रहता है। चूंकि सैद्वान्तिक व्यक्ति के इच्छा ज्ञानात्मक, समीक्षात्मक और तर्कसंगतता में है अतः उसके जीवन का मुख्य उददेश्य अपने ज्ञान को व्यवस्थित और योजनानुसार बनाना है।

2– आर्थिक मूल्य– एक व्यवसायिक व्यक्ति इस बात में दिलचस्पी रखता है कि उसके लिए क्या लाभप्रद है। वास्तविक रूप से व्यवसायिक व्यक्ति में शारीरिक जरूरतो (स्वंय के लिये संग्रह) की तृप्ति, उपयोगिता

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

में दिलचस्पी रहती है। व्यावसायिक जगत का वास्तविक रूप जैसे– उत्पादन, बेचने खरीदने तथा सामानो के खपत, जमाराशि के विस्तार तथा प्रत्यक्ष धन के संग्रह को ग्रहण करने पर आधारित होता है।

3– सौन्दर्यात्मक मूल्य– एक सौन्दर्यपरक व्यक्ति भावना और आकार प्रकार में ही अपने उच्चतम आदर्श को देखता है। प्रत्येक अनुभव, मनोहरता, आकृति और सही स्वास्थ्य के मत से प्रेरित होता है। वह जीवन के प्रत्येक भाव को भोगता है तथा उसका आनन्द उठाता है। उसका सम्बन्ध जीवन के रचनात्मक कड़ियो से होता है।

4. सामाजिक मूल्य– इस तरह के लोगों का उच्चतम आदर्श लोगों का प्यार है। आदर्शो के अध्ययन में यह परोपकारी और मानव जाति से प्रेम का पक्ष है। जिसका मापन किया जाता है। एक सामाजिक व्यक्ति दूसरें व्यक्ति की निरन्तर प्रंशसा करता हैं और इसलिये वह स्वयं दयालु, हमदर्द और स्वार्थहीन हैं। उसकी नजर में सैद्वान्तिक, व्यवसायिक , और सौन्दर्यपरक भाग या व्यवहार जडत्व व अमानवीय है।

5– राजनीति मूल्य– एक राजनीति व्यक्ति प्रथमतया शक्ति या प्रभुत्व की इच्छा रखता है। उसकी सक्रियता केवल राजनीति के संकरे गलियारो तक ही जरूरी नहीं है अपितु उसका पेशा कोई भी हो उसमें प्रभुत्व का गुण विद्यमान रहता है।

6– धार्मिक मूल्य– एक धार्मिक व्यक्ति का उच्चतम आदर्श एकता कहलाती है। वह रहस्यवादी होता है और उसका प्रयास पूरे ब्रहमाण्ड को एक समझना और स्वयं को इन समिम्मलित समूह से जोडना है मानवता की सेवा मनुष्य का सबसे बडा धर्म है। धर्म का अर्थ मानवता का उत्थान करना है। धर्म का अर्थ कोरो सिद्वान्त व विश्वास नही है। सच्चा धर्म कार्य में प्रकट होता है और वह जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है।

7–सामाजिक–आर्थिक स्थिति– प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक, आर्थिक स्थिति आशय किसी व्यक्ति विशेष अथवा उसके परिवार की शिक्षा , आय और रहन–सहन, तथा सामाजिक क्रिया कलापों में भाग लेने की स्थिति से लगाया जा सकता है। समाज में प्रायः तीन वर्ग प्रचलित है, उच्च वर्ग, मध्यम, वर्ग और निम्न वर्ग । अतः व्यक्ति को उसकी आय, शिक्षा तथा रहन–सहन के अनुसार इन तीन वर्गो में रखा जाता है। जो कि व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक स्थिति को व्यक्त करता है।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

अध्ययन की सार्थकता–

वास्तव में मूल्य ऐसा नाम है जो जगत को अर्थ प्रदान करता है। यह मूल्य ही है जो जीवन को अर्थ, आकर्षण,उच्चता और श्रेष्ठता प्रदान करते है। मूल्य की व्यक्ति के जीव को सार्थक बनाते है। मूल्य ही व्यक्ति के मन में विश्वास, श्रद्वा, प्रेरणा उत्तरदायित्व और कर्तव्य भावना आदि उत्पन्न करते है। मूल्यों के आधार ही व्यक्ति अपने जीवन दृष्टिकोण का निर्माण करता है मूल्य ही व्यक्ति के लिये उददेश्य, आदर्श लक्ष्य व साध्य बनते है, व्यक्ति अपने जीवन को इनकी प्राप्ति के लिये समर्पित कर देता है। इस जगत में होने वाला छोटे से छोटा परिवर्तन भी मूल्यों परिवर्तन के फलस्वरूप ही होता हैं और उसे मूल्यों के आधार पर ही समझा जा सकता है। मिल्टन का मानना है कि जीवन मूल्य ओस की बूदों के सदृश नही है जो मौसम के अनुसार दिखाई दे। इनकी जड़े प्रत्येक प्राणी में बहुत गहरी हैं तथा इनका वास्तविकता से गहरा सम्बन्ध है।

अध्ययन के उददेष्य–प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उददेश्य है–

1. स्नातक स्तर पर विद्यार्थियो मे उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर मूल्यों का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर पर विद्यार्थियो मे उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर सैद्वान्तिक मूल्यों का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर पर विद्यार्थियो मे उनके सामाजिक, आर्थिक स्तर के आधार पर सौन्दर्यात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।
4. स्नातक स्तर पर विद्यार्थियो मे उनके सामाजिक – आर्थिक स्तर के आधार पर सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।
5. स्नातक स्तर पर विद्यार्थियो मे उनके सामाजिक –आर्थिक स्तर के आधार पर राजनीतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
6. स्नातक स्तर पर विद्यार्थियो मे उनके सामाजिक –आर्थिक स्तर के आधार पर धार्मिक मूल्यों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं– प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्नलिखित है–

1.स्नातक स्तर पर अध्ययनरत उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियो के सैद्वान्तिक मूल्य स्तर मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2.स्नातक स्तर पर अध्ययनरत उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थिया के आर्थिक मूल्य स्तर से कोई सार्थक अन्तर नही है।

.3स्नातक स्तर पर अध्ययनरत उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियो के सौन्दर्यात्मक मूल्य स्तर से कोई सार्थक अन्तर नही है।

.4स्नातक स्तर पर अध्ययनरत उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियो के सामाजिक मूल्य स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5.स्नातक स्तर पर अध्ययनरत उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के के विद्यार्थियो के राजनीति मूल्य स्तर से कोई सार्थक अन्तर नही है।

.6स्नातक स्तर पर अध्ययनरत उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियो के धार्मिक मूल्य स्तर से कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन की परिसीमांए

1 प्रस्तुत अध्ययन शैक्षिक सत्र 2012–13 के दौरान अध्ययनरत विद्यार्थियो तक सीमित है।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

2 प्रस्तुत शोध ध्ययन उत्तर प्रदेश के जिला हापुड के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित है।

3 प्रस्तुत शोध अध्ययन जिला हापुड के एस0एस0वी0पी0जी0 कॉलेज तथा आई0 एम0 आई0 टी0 कॉलिज तक सीमित है।

4 प्रस्तुत शोध अध्ययनमें 100 विद्यार्थियों (50 छात्र और 50 छात्राओ) को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन

5 प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्नातक स्तर के द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियो तक सीमित है।

6 प्रस्तुत शोध बी0ए0, बी0काम0, बी0एस0सी0 , बी0बी0ए0, और बी0सी0ए0 के विद्यार्थियो तक सीमित है।

साहित्य की समीक्षा भटनागर–

कुमार–(1964)– ने छात्र नेत्रत्व के व्यक्तित्व अध्ययन में पाया कि छात्र नेता के सैद्वान्तिक एवं धार्मिक मूल्य निम्न थे तथा आर्थिक एवं सामाजिक मूल्य उच्च थे एवं मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही था।

पाल–(1966)– ने अभियांत्रिकी , विधि, चिकित्सा एवं शिक्षण सम्बन्धी चार व्यवसायो के लिए तैयारी कर रहे है छात्रों के व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं का अध्ययन किया । रे एवं चौधरी द्वारा अनुकूलित,आलपोर्ट–वनर्न–लिण्डसे के मूल्य परीक्षण का प्रयोग किया एवं प्रत्येक व्यवसायिक पाठयक्रम से 50 छात्रों को न्यादर्श के रूप मे चयनित किया गया। मूल्य प्रणाली के सैद्वान्तिक , आर्थिक सौन्दर्यात्मक, राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक आयामो का अध्ययन किया। अभियांत्रिकी छात्रों ने आर्थिक मूल्य को सर्वोच्च श्रेणी तक धार्मिक मूल्य को अन्तिम श्रेणी में रखा। चिकित्सा छात्रों ने सैद्वान्तिक मूल्य को प्रथम तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य को छठें स्थान पर रखा। शिक्षण व्यवसाय से सम्बन्धित छात्रों ने राजनीतिक मूल्य को सर्वोच्च श्रेणी तथा धार्मिक मूल्य को निम्नतम श्रेणी प्रदान की।

सिन्हा–(1971)– ने आलपोर्ट, वनर्न, लिण्डसे के ' मूल्य का अध्ययन के आधार पर निर्मित हुए मूल्य परीक्षण को अन्य उपकरण के साथ मूल्य अभिमुखता पर जेनरेशन गैप जानने के लिए प्रयोग किया। धार्मिक मूल्य युवाओं में सार्थक रूप से निम्न थे। सैद्वान्तिक, राजनीतिक, एवं सामाजिक मूल्य क्रमशः घटते हुए क्रम में पाए गए। प्रौढ़ समूह की तुलना में युवाओं का सामाजिक मूल्य अधिक उच्च ज्ञात हुआ। सामान्य समानताओं के अतिरिक्त प्रौढ़ो की तुलना में युवा पीढ़ी सार्थक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य में कम सामाजिक मूल्य में अधिक तथा राजनीतिक मूल्य में थोडा अधिक पाए गए।

कूले(Coley)–2002– इन्होने अमेरिका के एक किण्डर गार्डेन के बच्चों पर देश व्यापी अध्ययन किया और पाया कि 36 प्रतिशत माता–पिता जो सबसे कम आय वाले है ये अपने बच्चों को दैनिक आधार पर पढ़ाते है जबकि इसकी तुलना मे 62 प्रतिशत लोग जो उच्च आय वर्ग के है वे अपने बच्चों को रेगूलर पढ़ाते है।

ऑर(Oor) (2003)– इस विषय पर अध्ययन करने के पश्चात् इन्होने बताया कि इस समाज में कम सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले इस लायक नही होते जो किताबें खरीद सके, ट्यूटर रख सके, कम्प्यूटर खरीद सके और अपने बच्चो को सकारात्मक वातावरण दे सके। अतः उनके बच्चे पीछे रह जाते है।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

इस विधि में हापुड़ जिले के एस0एस0वी0 पी0जी0 कॉलिज तथा आई0एम0आई0टी0कॉलिज के बी0ए0, बी0 कॉम0, बी0एस0सी0, बी0बी0ए0, तथा बी0सी0ए0 के द्वितीय वर्ष के 100 विद्यार्थियो को चुना गया है। प्रस्तुत उपकरण एवं विधियो द्वारा इनके सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को ज्ञात किया गया एवं निहित मूल्यों के सम्बन्ध में सर्वेक्षण किया गया।

प्रयुक्त जनसंख्या एवं न्यादर्ष– प्रस्तुत अध्ययन मे प्रयुक्त जनसंख्या एवं न्यादर्श अध्ययन में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश के स्नातक स्तर के द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियो को सम्मिलत किया गया है।

न्यादर्ष– प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के लिए वर्गबद्व यादृश्चिक विधि का प्रयोग किया गया है इस अध्ययन में यादृश्चिक विधि से 100 विद्यार्थियों को चुना गया जो जिला हापुड़ के एस0एस0वी0पी0जी0 कॉलेज तथा आई0एम0आई0टी0 कालेज में स्नातक द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी है तथा सत्र 2012–13 मे पंजीकृत है।

उपकरण का प्रषासन– प्रस्तुत उपकरण स्वयं प्रशासित होता है, इसमें मौखिक निर्देश देने की आवश्यकता नहीं है

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियॉ–

मध्यमान–मध्यमान का तात्पर्य प्राप्तांको के अंक गणितीय औसत से होता है । प्रस्तुत अध्ययन में निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया है।

$$M = \frac{\sum x}{N}$$

M = मध्यमान ;Mean)

∑x .प्राप्तांको का योग (Sum of Scoores)

N = समूह के छात्रों की सख्या (No. of scores)

2– काई–वर्ग परीक्षण– अप्राचल ऑकड़ो में सार्थकता की जॉच के लिए काई–वर्ग परीक्षण का महत्वपूर्ण स्थान है। काई–वर्ग x^2 परीक्षण में निरीक्षित (Observed) तथा प्रत्याशित (Expected) आवृत्तियों का अन्तर निकाल कर प्रत्येक अन्तर का वर्ग निकाला जाता है और प्रत्येक अन्तर के वर्ग को उसकी प्रत्याशित आवृत्ति से भाग दिया जाता है। इस प्रकार प्राप्त इन सब संख्याओं को जोड़ लिया जाता है और वह x^2 कहलाता है। इसे सूत्र के रूप में इस प्रकार लिखा जाता है–

$$x^2 = \sum \frac{(fo-fe)2}{fe}$$

जहां fo निरीक्षित आवृत्तियां

fe प्रत्याशित आवृत्तियां

ऑकडों. का विष्लेषण एवं अर्थापन–

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

प्रस्तुत अध्ययन मे मूल्यो के मापन के लिए डा0आर0के0 ओझा तथा डा0 महेश भार्गव के Study of Value Test का तथा सामाजिक –आर्थिक स्तर के मापन के लिये सुनील कुमार उपाध्याय एवं अलका सक्सेना dk Socio Economic Status Scale नामक उपकरण का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में ऑकडों के संकलन के पश्चात् मध्यमान तथा काई–वर्ग परीक्षण के द्वारा गणना करके अध्ययन के निष्कर्ष को प्राप्त किया गया है।

तालिका–4.1

सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर सैद्वान्तिक मूल्य से सम्बन्धित ऑकड़े –

सामाजिक आर्थिक स्तर		मूल्य स्तर			योग	x^2 का मान	सार्थकता परिणाम (0.05 स्तर पर)
		उच्च	सामान्य	निम्न			
उच्च	fo	4	17	1	22	1.25	सार्थक अन्तर नहीं
	fe	3.3	18.04	0.66			
सामान्य	fo	6	40	1	47		
	fe	7.04	38.54	1.41			
निम्न	fo	5	25	1	31		
	fe	4.65	25.42	0.93			
योग		15	82	3	100		

तालिका संख्या–5.1 मे सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर सैद्वान्तिक मूल्य से सम्बन्धित ऑकडों को प्रदर्शित किया गया है। उपयुर्क्त तालिका में प्रेषित आवृत्ति के लिए fo तथा प्रत्याशित आवृत्ति के लिये fe का प्रयोग किया गया है। तालिका में संगठित काई–वर्ग (x^2) का मान 1.25 है जो 5% सार्थकता स्तर पर 9.49 और 1% सार्थकता स्तर के लिये 13.28 से बहुत कम है। यहां हमारी निराकरणीय परिकल्पना सत्य है। अतः विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनके सैद्वान्तिक मूल्य पर कोई प्रभाव नही पड़ता है। यहां परिकल्पना एक के लिए यह कहा जा सकता है कि उच्च, सामान्य तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियो के सैद्वान्तिक मूल्य स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

तालिका 4.2

सामाजिक– आर्थिक स्तर के आधार पर आर्थिक मूल्य से सम्बन्धित ऑकड़े–

सामाजिक आर्थिक स्तर	मूल्य स्तर			योग	(x^2) का मान	सार्थकता परिणाम (0.05 स्तर पर)
	उच्च	सामान्य	निम्न			

उच्च	fo	3	18	1	22	4.21	सार्थक अन्तर नहीं
	fe	3.52	17.82	0.66			
सामान्य	fo	8	38	1	47		
	fe	7.52	38.07	1.41			
निम्न	fo	5	25	1	31		
	fe	4.96	25.11	0.93			
योग		16	81	3	100		

fo –प्रेक्षित आवृत्ति, fe –प्रत्याशित आवृत्ति।

तालिका संख्या 5.2 में सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर आर्थिक मूल्य से सम्बन्धित ऑकड़ो को प्रदर्शित किया गया है। तालिका में संगणित काई–वर्ग (x^2) का मान .421 है जो 5%सार्थकता स्तर पर 9.49 और 1% सार्थकता स्तर के लिए 13.28 से बहुत कम है। यहां हमारी निराकरणीय परिकल्पना सत्य है। अतः विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनके आर्थिक मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यहां परिकल्पना दो के लिए कहा जा सकता है कि उच्च, सामान्य तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

तालिका –4.3

सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर सौन्दर्यात्मक मूल्य से सम्बन्धित ऑकड़े–

सामाजिक आर्थिक स्तर		मूल्य स्तर			योग	(x^2) का मान	सार्थकता परिणाम (0.05 स्तर पर)
		उच्च	सामान्य	निम्न			
उच्च	fo	0	12	10	22	0.616	सार्थक अन्तर नहीं
	fe	0	12.98	9.02			
सामान्य	fo	0	27	20	47		
	fe	0	27.73	27.73			
निम्न	fo	0	20	11	31		
	fe	0	18.29	12.71			
योग		0	59	41	100		

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

fo –प्रेक्षित आवृत्ति, fe –प्रत्याशित आवृत्ति।
तालिका संख्या–5.3 में सामाजिक– आर्थिक स्तर के आधार पर सौन्दर्यात्मक मूल्य से सम्बन्धित ऑकडो को प्रदर्शित किया गया है। तालिका में संगणित काई –वर्ग (χ^2) का मान 0.616 है जो 5% सार्थकता स्तर पर 9.49 और 1% सार्थकता स्तर के लिए 13.28 से बहुत कम है । यहां हमारी निराकरणीय परिल्पना सत्य है। अतः विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके सौन्दर्यात्मक मूल्य पर कोई प्रभाव नही पड़ता है। यहां परिकल्पना तीन के लिए कहा जा सकता है कि उच्च सामान्य तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

`तालिका –4.4

सामाजिक– आर्थिक स्तर के आधार पर सामाजिक मूल्य से सम्बन्धित ऑकड़े –

सामाजिक आर्थिक स्तर		मूल्य स्तर			योग	(χ^2) का मान	सार्थकता परिणाम (0.05 स्तर पर)
		उच्च	सामान्य	निम्न			
उच्च	fo	2	19	10	22	5.29	सार्थक अन्तर नहीं
	fe	3.74	17.16	9.02			
सामान्य	fo	12	32	20	47		
	fe	7.99	36.66	27.73			
निम्न	fo	3	1	11	31		
	fe	5.27	1.55	12.71			
योग		17	5	41	100		

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

fo –प्रेक्षित आवृत्ति, fe –प्रत्याशित आवृत्ति।
तालिका संख्या–5.4 मे सामाजिक –आर्थिक स्तर के आधार पर सामाजिक मूल्य से सम्बन्धित ऑकड़ो को प्रदर्शित किया गया है तालिका में संगणित काई–वर्ग (χ^2) का मान 5.29 है जो 5% सार्थकता स्तर पर 9.49 और 1% सार्थकता स्तर के लिए 13.28 से कम है। यहां हमारी निराकरणीय परिकल्पना सत्य है। अतः विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का सामाजिक मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यहां परिकल्पना चार के लिए कहा जा सकता है कि उच्च, सामान्य तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 4.5

सामाजिक– आर्थिक स्तर के आधार पर राजनीतिक मूल्य से सम्बन्धित ऑकडें–

सामाजिक आर्थिक स्तर		मूल्य स्तर			योग	(χ^2) का मान	सार्थकता परिणाम (0.05 स्तर पर)
		उच्च	सामान्य	निम्न			
उच्च	fo	4	18	0	22	8.88	सार्थक अन्तर नहीं
	fe	2.42	18.26	1.32			
सामान्य	fo	3	38	6	47		
	fe	5.17	39.01	2.82			
निम्न	fo	3.41	27	0	31		
	fe	11	25.73	1.86			
योग		11	83	6	100		

fo –प्रेक्षित आवृत्ति, fe –प्रत्याशित आवृत्ति।

तालिका संख्या 5.5 में सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर राजनीतिक मूल्य से सम्बन्धित ऑकडो को प्रदर्शित किया गया हैं तालिका में संगणित काई– वर्ग (χ^2) का मान 8.88 है जो 5% सार्थकता स्तर पर 9.49 और 1% सार्थकता स्तर के लिये 13.28 से कम है । यहां हमारी निराकरणीय परिकल्पना सत्य है। अतः विद्यार्थियों के सामाजिक– आर्थिक स्तर का उनके राजनीतिक मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यहां परिकल्पना पॉच के लिए कहा जा सकता है कि उच्च, सामान्य तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के राजनीतिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

तालिका 4.6

सामाजिक– आर्थिक स्तर के आधार पर धार्मिक मूल्य से सम्बन्धित ऑकडें–

सामाजिक आर्थिक स्तर		मूल्य स्तर			योग	(χ^2) का मान	सार्थकता परिणाम (0.05 स्तर पर)
		उच्च	सामान्य	निम्न			
उच्च	fo	2	17	3	22	4.32	सार्थक
	fe	2.42	18.26	1.32			
सामान्य		5	39	3	47		

	fo						अन्तर नहीं
	fe	5.17	39.01	2.82			
निम्न	fo	4	27	0	31		
	fe	3.41	25.73	1.86			
योग		11	83	6	100		

वि–प्रेक्षित आवृत्ति, मि–प्रत्याशित आवृत्ति।
तालिका संख्या 5.6 में सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर धार्मिक मूल्य से सम्बन्धित ऑकडो को प्रदर्शित किया गया हैं तालिका में संगणित काई–वर्ग (χ^2) का मान 4.32 है जो 5% सार्थकता स्तर पर 9.49 और 1% सार्थकता स्तर के लिये 13.28 से कम है। यहां हमारी निराकरणीय परिकल्पना सत्य है। अतः विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके धार्मिक मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यहां परिकल्पना छः के लिए कहा जा सकता है कि उच्च,सामान्य तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन के निष्कर्ष–

1 विद्यार्थियो में सैद्वान्तिक , आर्थिक, सौन्दर्यात्मक , सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक मूल्यों का स्तर सामान्य पाया गया ।छात्र में सैद्वान्तिक , आर्थिक, सौन्दर्यात्मक , सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक मूल्यों का स्तर सामान्य पाया गया 2 छात्राओं में सैद्वान्तिक , आर्थिक, सौन्दर्यात्मक , सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक मूल्यों का स्तर सामान्य पाया गया 3 उच्च, सामान्य तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों में मूल्यों का स्तर सामान्य पाया गया।

4 उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियो का सैद्वान्तिक मूल्य स्तर सामान्य पाया गया तथा उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सैद्वान्तिक मूल्य स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5 उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों का आर्थिक मूल्य स्तर सामान्य पाया गया तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य स्तर से कोई सार्थक अन्तर नही है।

6 उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों का सौन्दर्यात्मक मूल्य स्तर सामान्य पाया गया तथा सामाजिक – आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक मूल्य स्तर से कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

7 उच्च, सामान्य, एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों को सामाजिक मूल्य स्तर सामान्य पाया गया तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य स्तर से कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

8 उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों का राजनीतिक मूल्य स्तर सामान्य पाया गया तथा उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों के राजनीतिक मूल्य स्तर से कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

9 उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर विद्यार्थियों का धार्मिक मूल्य स्तर सामान्य पाया गया तथा उच्च, सामान्य एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर का विद्यार्थियो के धार्मिक मूल्य स्तर से कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

षैक्षिक निहितार्थ–

1 छात्रों को नैतिक शिक्षा का ज्ञान अवश्य देना चाहिए, ताकि वे अपने से बड़े तथा छोटों का आदर'–सम्मान करना सीख सकें।

2 छात्रों को उनकी संस्कृति एवं सभ्यता का ज्ञान अवश्य कराना चाहिए, जिससे वह अपनी संस्कृति को धरोहर के रूप में रखे तथा आधुनिकता से प्रभावित होने पर भी संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहूँचा सकें।

3 सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए सामाजिक व राष्ट्रीय त्योहारो को एक साथ मनाना चाहिए जिससे बच्चों मे उचित मूल्यों का विकास हो सके।

4 प्रस्तुत अध्ययन अभिभावकों के दृष्टिकोण से भी उपयोगी है । इस अध्ययन द्वारा अभिभावक अपने बच्चो में उचित मूल्यों, तथा आचरण के विकास के लिए निरन्तर प्रयासरत रहेगे।

5 प्रशासक एवं समाज सुधारक भी एक अच्छे समाज व राष्ट्र के विकास के लिए मूल्यों को प्राथमिकता देगें तथा मूल्यों के निर्माण में प्रयासरत रहेगे।

6 प्रस्तुत अध्ययन शोद्य की दृष्टि से भी उपयोगी है । अन्य शोधकत्री जो मूल्यों से सम्बन्धित विषय पर अध्ययन करेगें उनके लिए यह अध्ययन एक मार्ग दर्शन का कार्य करेगा।

भविष्य में शोध अध्ययन हेतु सुझाव–

1 प्रस्तुत अध्ययन को अधिक विश्वसनीय तथा वैद्य बनाने के लिए बड़े–आदर्श का चयन किया जा सकता है । एक से अधिक शोधकर्ताओं को अध्ययन करने के लिये प्रेरित किया जा सकता है।

2 प्रस्तुत अध्ययन एक चर तक सीमित न रखकर कई चरों के परिपेक्ष्य में किया जा सकता है।

3 प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के अन्य जनपदों के छात्रों को लेकर किया जा सकता है।

4 प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर के छात्रों के अतिरिक्त माध्यमिक स्तर या उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों को सम्मिलित किया जा सकता है।

5 प्रस्तुत शोध अध्ययन ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में तुलनात्मक अध्ययन के परिपेक्ष्य में भी किया जा सकता है।

6 प्रस्तुत अध्ययन को हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के तुलनात्मक अध्ययन के रूप में भी किया जा सकता है।

7 प्रस्तुत अध्ययन लिंग तथा परिवेश आदि पर भी किया जा सकता है।

8 प्रस्तुत अध्ययन में एक से अधिक शोधकर्ताओं को अध्ययन करने के लिये प्रेरित किया जा सकता है।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

9 प्रस्तुत शोध अध्ययन परिवार के प्रकार पर भी किया जा सकता है।

10 प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षा संकाय को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

11 प्रस्तुत शोध पाठय्क्रम एवं उसके प्रभाव पर भी किया जा सकता है।

12 प्रस्तुत अध्ययन को अनपढ एवं पढे लिखे व्यक्तियों के तुलनात्मक मुल्यांकन के लिये भी किया जा सकता है।

13 प्रस्तुत शोध विवाहित एवं अविवाहित छात्र छात्राओं के मूल्य पर किया जा सकता है।

14 प्रस्तुत अध्ययन में जाति व धर्म के आधार पर भी मूल्यों का आकलन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1सक्सेना एन0 आर0 स्वरूप, शिक्षा विभाग के दार्शनिक आधार, 2011 पृष्ठ संख्या–601–602 ।

2रूहेला प्रो0 एस0 पी0,शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्री आधार, प्रथम संस्करण 2010, अग्रवाल, पृष्ठ संख्या–168–171।

3कपिल एच0 के0, सिंह ममता, सांख्यिकीय के मूल तत्व, संशोधित संस्करण 2012, अग्रवाल, पृष्ठ संख्या–458–463।

4भटानागर डॉ0 ए0बी0(2011) शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली पृष्ठ संख्या–47–49

5.http://www.apa.org/pi/ses/resources/publications/fact-sheet-references.aspx.

जनरल से सम्बन्धित

6. Internation Journal of Sociology and Anothropology Vol.3 (11) PP.436-439, Novermber 2011.

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522